गुरदेव सिह खुश द्वारा विकसित धान की किस्में

गुरदेव सिंह खुश

द राइस मैन ऑफ इंडिया

खुश द्वारा विकसित धान की चमत्कारी किस्में

IR36

- वर्ष **1976** में प्रस्तुत,
- **1980** के दशक के दौरान इस प्रजाति को विश्वभर में सालाना लगभग **11** मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में लगाया गया जो कि इतिहास में किसी भी खाद्य फसल के आवरण वाला उच्चतम क्षेत्र है।
- **110-115** दिनों की परिपक्वता अवधि के साथ यह प्रजाति प्रति हेक्टेयर **9-10** टन अनाज पैदा कर सकती है जबकि पारंपरिक प्रजातियाँ **160-180** दिनों में प्रति हेक्टेयर **1-3** टन अनाज उत्पादित करती हैं। निम्न परिपक्वता अवधि के साथ उच्च पैदावार किसानों को साल भर में चावल की दो फसलें उगाने में सक्षम बनाती है।
- यह धान की पहली किस्म थी जिसे कीटों और बीमारियों के व्यापक समूह के खिलाफ प्रतिरोध प्रदान करने हेतु छह देशों की **14** देशी प्रजातियों और एक जंगली की प्रजाति के जीनों को शामिल करके विकसित किया गया था।

IR64

- इसे वर्ष **1985** में प्रस्तुत किया गया और **1990** के दशक के अंत में **10** मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल में लगाया गया।
- **IR36** की तुलना में कीटों तथा रोगों के खिलाफ अधिक प्रतिरोधकता साथ ही उच्च पैदावार। इसे आठ देशों की धान प्रजातियों के **20** जीनों को शामिल कर विकसित किया गया।
- बनावट और स्वादिष्टता के मामले में अनाज की गुणवत्ता में अधिक सुधार के साथ ही राइस मिलिंग रिकवरी भी उच्च।

अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान **(IRRI)** में खुश की टीम ने **328** लाइनों पर काम किया और **1967** से **2002** के बीच **75** देशों में **643** किस्मों को प्रस्तुत किया।

वर्ष **2002** में विश्वभर में चावल/धान क्षेत्र के लगभग **60%** हिस्से में **IRRI** द्वारा विकसित धन की किस्मों को लगाया गया था, जिसके परिणामस्वरूप चावल के उत्पादन में **2.3** गुना से अधिक वृद्धि हुई।

DRISHTI IAS
दृष्टि The Vision

और पढ़ें...

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/khush-rice-varities-1

दृष्टि The Vision